

पूज्य दाजी द्वारा दी गई वार्ता

7th जुलाई 2019 रविवार, प्रातः9.30

सभी को प्रणाम, मैं अच्छी संख्या युवाओं यहां देखकर अत्यधिक खुश हूँ। लगभग 600 से 700। पूरे विश्व में आज के इस प्रसारण का कई उद्देश्य है? उनमें से एक यह कि 2020 में हमारे रामचन्द्र मिशन को 75 वर्ष पूरे हो जायेंगे, सो इसकी 75 वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में होने वाले उत्सव में शामिल होने के लिए मैं हर एक को न्योता देता हूँ। इस उत्सव को हमने दो भागों में विभाजित करने का निर्णय लिया है। पहला बैच 28, 29 और 30 जनवरी और दूसरा बैच पहली फरवरी से 3 फरवरी के लिये है। 2 फरवरी को लालाजी साहेब का जन्मदिन सौर (सूर्य) कैलेंडर के हिसाब से आता है और 29 जनवरी को चन्द्र कैलेंडर के हिसाब से पड़ता है जिसे बाबूजी महाराज बसंत पंचमी कहा करते थे। मैं चाहता हूँ कि सभी पूरी सामर्थ्य के साथ इस उत्सव में भाग लें।

हमने 24 जुलाई और 28 सप्टेम्बर को होने वाले भंडारे रद्द कर दिये हैं, जिससे जो लोग इन उत्सवों में भाग लेने में असमर्थ रहते हैं, वे भी अभी से पैसों की बचत करके बसंत पंचमी और 2 फरवरी के उत्सव में आ सके। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यह संख्या रोज़ाना आने वाले अभ्यासियों तक ही सीमित न करके, एस. कनेक्ट, यू. कनेक्ट, सी. कनेक्ट, और भी जितने कनेक्ट हैं उन सब को शामिल करें और उन्हें भंडारे के वातावरण को महसूस करने का न्योता दें। उन सभी ने प्राणाहूति को महसूस किया होगा पर भंडार के दिनों में जो विशेष कृपा बरसती है, उसका अनुभव उन्हें नहीं रहा होगा। हममें से अधिकांश के लिए यह जीवन भर का उत्सव रहेगा। सभी को यह उत्सव 1999 में चेन्नई में बाबूजी महाराज के शताब्दी समारोह की तरह हमें याद रहेगा।

इस समारोह के लिये ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में लोग रजिस्टर करें कि आर्गेनाइजर भी अचंभित रह जायें। काफ़ी लोगों ने तो 1999 में हुये इस अवसर के चारों बैच में भाग लिया था। मैं चाहता हूँ कि ऐसा अनुभव इस बार 2020 में फिर से हो।

अब मैं आप लोगों के साथ कुछ गणित सांझा करना चाहूंगा। पिछले कुछ वर्षों हार्टफुनेस वे ने विश्व में लाखों अभ्यासियों की संख्या पार कर ली है। पिछले ५-६ सालों में प्रिसेप्टरों की संख्या भी करीब करीब तीन गुनी हो गयी है। और हज़ारों कार्यकर्ता लगातार हार्टफुलनेस की गतिविधि को सफल बनाने में लगे हुए हैं।

भारत में ही अब तक 25 से ज़्यादा ध्यानोत्सव सम्पन्न हो चुके हैं और उससे ज़्यादा अभी आगे आने वाले हैं। 2020 में आँकड़ा सौ की संख्या से पार कर

जायेगा। पर मैं जहाँ तक देख रहा हूँ कि ध्यानोत्सव को बड़े रूप में स्टेडियम जैसी जगह के बजाय छोटे रूप में 2-3 किमी के दायरे में करवाना ज़्यादा सरल होता है और इस सीमा के अंदर हम अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित कर सकते हैं। जब भी हम इसे 2से 3 किलोमीटर से ज्यादा के स्तर पर करने की कोशिश करते हैं तो प्रतिभागियों की संख्या कम हो जाती है। इसको पूरे शहर के स्तर पर करने की आवश्यकता नहीं है। इसके कई फ़ायदे होंगे। समूह छोटा होगा तो बड़ा हाल नहीं लेना पड़ेगा, मानसून के दौरान भी यह सुविधाजनक रहेगा। खर्च भी कम आयेगा, छोटे समूह को संभालना भी आसान रहेगा। अगर आप 5,000 से 10,000 का लक्ष्य रखते हैं तो उसे सीमित संख्या में वॉलंटियर की सहायता से इसे संभालना बहुत कठिन हो जाता है।

अब हम आगे बढ़ते हैं, आगे चलकर हमारे पास कई बड़े हार्टफुलनेस प्रस्ताव आ रहे हैं जैसे कि गुजरात में, तेलंगाना में, महाराष्ट्र में कई स्कूल गवर्नमेंट की तरफ़ से प्रस्ताव आ रहे हैं, जिनमें से एक मुंबई म्यूनिसिपल कांफ़ॉरिशन है जिसमें 1 लाख लोग कार्यरत हैं, अब उन्हें कैसे संभालना है? जब कि वहाँ हमारे पास रोज़ आने वाले 500 अभ्यासी हैं। यह एक कठिन काम है। महबूब नगर में हमें ऐसी परेशानी का सामना करना पड़ा जब हमें 720 सरपंचों को प्रशिक्षित करना था, मतलब 720 गाँव और हमारे पास 500 प्रिसेप्टर ही उपलब्ध थे अब इस समस्या को कैसे सुलझाया जाय अगर हर गाँव के लिये एक प्रशिक्षक को भी भेजे तो 700 प्रशिक्षकों की ज़रूरत है जो लगातार तीन दिन वहाँ काम करें और उनके पीछे हम 100 नये जिज्ञासु (seekers) की अपेक्षा करते हैं तो उन्हें प्रशिक्षित करना और यह बहुत हताश करने वाला होता है। इसलिये मैं यह प्रस्ताव उन सभी कनेक्ट प्रोग्राम के लिए और उन सभी वॉलंटियर जो इन सभी प्रोग्राम G कनेक्ट, यू कनेक्ट, स्कूल कनेक्ट का प्रचार करना चाहते हैं के लिए रखना चाहता हूँ। यह उन लोगों के द्वारा सम्भव है जो अपनी सेवाएं देने के इच्छुक हैं। यह अपनी इच्छा से बिना कुछ लिये करनेवाला काम नहीं होगा, मैं यह काम रोज़गार के रूप में उनको देना चाहूँगा। अपनी क्षमतानुसार इस बारे में सोचिये। हमारे यहाँ भारत में 700 के जिलें हैं। अगर हम अगले दो सालों में 300 जिलों पर ध्यान दें तो इसका मतलब है, एक साल में 150 जिलों में काम करना है। हर जिलें में 10 मंडल है तो $150 \times 10 = 1500$, मंडल हो गये। अब हर मंडल में दो कार्यकर्ताओं को रखें तो हमें 3000 कार्यकर्ता चाहिये। अब हम उन्हें 20-25 से 30,0000 हिसाब से यातायात के खर्चों के वेतन देते हैं तो इस खर्च का आँकड़ा हर साल 60 से 70 करोड़ रूपये तक पहुँच जायेगा। संचित धन से कितने दिन चलेगा, ज़्यादा नहीं। हमारे पास इतनी बड़ी मात्रा में धन भी नहीं है ना ही हमारे पास सी.स.आर फंडिंग द्वारा धन एकत्र करने का कोई प्रभावी तरीका है। हमें हमारे सीमित

स्रोत पर ही निर्भर रहना है कि हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सके। अपने केलकुलेटर या फ़ोन को हाथ में ले और अंदाज़ लगायें, एक दिन में 50 रूपये की बचत, पूरे साल 365 दिन और 50 अभ्यासी, यह आँकड़ा 91 करोड़ 50,000 पर पहुँच जायेगा। हम हर दिन 50 रूपये बचत करके कुछ खो रहें हैं क्या? हममें से ज़्यादा लोग यह बचत कर सकते हैं। हममें से कुछ एक हर महीने 5 करोड़ रूपये खर्च कर देते हैं और कुछ नहीं रुकता। वहीं कुछ अभ्यासियों के लिये 10 रूपये हर दिन बचत करना भी कठिन होता है। सो हममें से ज़्यादातर लोग लगभग 50 रूपया की बचत कर सकते हैं। और इससे हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। भारत के 150 जिलों में हार्टफुलनेस प्रस्ताव को पहुँचा सकते हैं। बचा हुआ धन आने वाले ध्यानोत्सव में खर्च कर सकते हैं। हमारे किसी भी ध्यानोत्सव की व्यवस्था बिना खर्च/ धन के नहीं होती। किसी किसी ध्यानोत्सव का खर्च 25 लाख आता है, जबकि कुछ एक कम खर्च 8 लाख रूपयें में भी हो जाते हैं। हमने देखा है कि तक़रीबन 16-18 लाख रूपये का खर्च हर ध्यानोत्सव में आता है।

अब जरा सोचिए जोड़ कर देखिए यदि हम साल में 200 ध्यान उत्सव का लक्ष्य रखते हैं तो यह खर्च कितना होगा? हमें साल भर सभी भंडारों का प्रबंध भी देखना होता है इसके अतिरिक्त हमारे पास हमारे कुछ अतिथि भी आते हैं।

इस तरह से हमारे पास कई चीजें हैं जो हम करना चाहेंगे। जैसे कि हम हर महीने कई हजार अध्यापकों को प्रशिक्षित करना। हमारे पास तय करने के लिए एक लंबा रास्ता है। वे सभी लोग जो इस लक्ष्य को पूर्ण करने में सहयोग करने के इच्छुक हैं मैं उन सभी से प्रतिदिन ₹50 बचत करने का अनुरोध करता हूँ। यह हमको लंबे समय तक सहायता प्रदान करेगा। यह धनराशि कैश में देने की आवश्यकता नहीं है। मैं लोकल सेंटर्स के स्तर पर कैश में डोनेशन जमा करवाने का पक्षधर नहीं हूँ।

इसका सबसे सरल तरीका यह है कि प्रतिदिन आप ₹50 बचाएं और 30 दिन बाद $50 \times 30 = 1500$ रुपए मासिक आप सीधे हमारे डोनेशन अकाउंट में जमा करा सकते हैं। यह सरल है। जो लोग इससे ज्यादा देना चाहते हैं उनका स्वागत है।

दरअसल कुछ समय पूर्व हमने अमेरिका में \$1 प्रतिदिन की बचत की एक शुरुआत की थी। केवल 1 डॉलर प्रतिदिन। और धीरे-धीरे इसका स्तर बढ़ता चला गया। आप से करके देखिए \$1 प्रतिदिन और 2000 अभ्यासी \times 365 दिन साल के। उस देश में हर साल हम एक नया आश्रम बना सकते हैं। यही चीज यहां भी हो सकती है। यदि हम 50000 अभ्यासी प्रतिदिन ₹50 जमा

करें। और हमारे पास बिना किसी को दबाव में डाले भारतवर्ष में लगभग 20 आश्रम हो सकते हैं।

जरा सोचिए अगर हम सिर्फ कुछ एक समृद्ध लोगों पर ही निर्भर रहते हैं तो ऐसी हालत में क्या होगा ? हम उनके कितने कृतज्ञ हो जायेंगे जब एक ही आदमी 20 करोड़, 50 करोड़ रुपये दे रहा है। यह एहसान बहुत भारी होता है। इसकी जगह अगर हर एक आदमी मिशन में अपना योगदान दे तो बहुत ही अच्छा होगा। मैं फिर से एक बार यह कह रहा हूँ कि यह योगदान जरूरी नहीं है। यदि आपको कोई शंका है और आप यह योगदान नहीं देना चाहते तो इसके बारे में कोई बात न करें कि मैं गुरु प्रसाद के रूप में अपने मालिक को यह उपहार देना पसंद करता हूँ। अनिष्कुक (unwilling) हृदय उस नारंगी की तरह है जो अभी पकी नहीं है। वह आम अभी पका नहीं है तो उसका स्वाद खट्टा ही होगा। अनिष्कुक लोगों को इसमें भागीदार बनने की जरूरत नहीं है। हृदय को खुलने दें और मिशन के हित के लिये प्रार्थना करें। आश्वस्त रहें कि आपकी प्रार्थना से हार्टफुलनेस अभियान सफल हो। ईश्वर की कृपा बरसे और यह अभियान और भी बेहतर ऊँचाइयों पर पहुँचे।

भौतिक पहलू पर इतनी बात करने के बाद अब मैं आध्यात्मिक पहलू पर बात करना चाहूँगा। यह हमारे अपने आपके बदलाव के बारे में है।

शुरू-शुरू में हममें से ज्यादातर पहले हफ्ते, दूसरे हफ्ते, पहले साल, दूसरे और तीसरे साल में जबरदस्त बदलाव महसूस करते हैं। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं यह बदलाव धीमा हो जाता है और हम कहीं न कहीं अपनी पुरानी आदतों में रह जाते हैं। हमारा आगे बढ़ना रुक जाता है। हम इस भुलावे में रह जाते हैं कि हम आगे बढ़ रहे हैं यही सोच हमारे आगे बढ़ने के रास्ते में रुकावट बन जाती है। ऐसा मैं 99% अभ्यासियों में देख रहा हूँ इसीलिये आज मैं यह बात आप लोगों के आगे रख रहा हूँ। आप इसके बारे में सोचें कि आप कहाँ हैं ?

- क्या आप अपनी आध्यात्मिक प्रगति से खुश हैं ?
- आप कहाँ गलत चले गए हैं ?
- हम अपने आपको कहाँ सही कर सकते हैं ?
- आपको अपनी प्रगति के लिए मालिक से क्या मदद चाहिए ?

यह कुछ मूलभूत प्रश्न हैं इस पर मनन करें और अपने आपको ही जवाब दें। मुझे कई मिलियन ईमेल नहीं चाहिए। यह आपकी आंतरिक बातचीत है।

- क्या मैं इतने सालों की साधना के बाद भी अपनी प्रगति से खुश हूँ ?
- क्या अभी भी मुझे कुछ शंका है ?
- क्या यह मिशन मेरा अपना बन गया है ?
- क्या सारे अभ्यासी मुझे अपने भाई-बहन लगते हैं ?
- क्या मैं उनका अपना हूँ ? क्या वे मेरे अपने हैं ?

◦ क्या हम सब इस भव्य मिशन की अपनी संपत्ति हैं ?

जब हम आसान सी किताब “सत्य का उदय” पढ़ते हैं तो उसमें क्या पाते हैं ? पाँच साल पहले आपने जब यह किताब पढ़ी थी उस समय आपकी क्या समझ थी ? आज जब आप वह किताब फिर से पढ़ते हैं यदि आपकी समझ आपको और गहराई में नहीं ले जाती तो इसका मतलब आप ठहराव की स्थिति में हैं। यदि वह अध्याय आपको गहराई में ले जाता है और अलग तरह से अच्छा लगता है। आपके हृदय के तारों को झंकृत कर देता है। आपको पहले से ज्यादा प्रभावित करता है। तब आप अपने आपको भाग्यशाली मान सकते हैं पर यह आपकी अपनी अन्दरूनी समझ है आपके लिए प्रेरणा।

कई अभ्यासी लालाजी महाराज की पुस्तक “अक्षर सत्य” को आज 40 वर्षों की साधना के बाद भी समझ नहीं पाते हैं। उसमें प्रयोग में आए शब्द लोगों को असमंजस में डाल देते हैं। अगर आपको यह पुस्तक समझ में आती है तो आप अपने आपको भाग्यशाली समझ सकते हैं। अगर आपकी समझ में कमी आ रही है तो अपनी साधना को शुरूआत से फिर से दोहरायें। शब्द, वाक्य सीमित होते हैं फिर भी जब हम पढ़ते हैं तो हमारी अन्दरूनी हालत को बताते हैं।

मैं आप सब लोगों द्वारा दिए गये सुझावों को लेना पसंद करूँगा कि हम हार्टफुलनेस अभियान को और भी तेजी से इन मंडलों में आगे ले जा सकें। मैं इन सभी राज्यों में कर्नाटक, आंध्रा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश जहाँ हमारी उपस्थिति मजबूत है, तो हमें कहां से शुरू करना चाहिए? जहां हमारी उपस्थिति मजबूत है या उन जगहों से जहाँ हमारी उपस्थिति अभी नगण्य है ?

मैं उन जगहों पर ज्यादा तेजी से काम को आगे बढ़ाने के पक्ष में हूँ जहाँ हमारी उपस्थिति मजबूत है। आंध्रा, तेलंगाना, तमिलनाडु में काम तेजी से शुरू भी हो गया है क्योंकि हम जो भी काम कर रहे हैं वो हमारे मौजूदा सदस्यों की मदद से ही कर रहे हैं। संक्षिप्त में, मैं आप सबसे यही अपील करता हूँ कि हमें हार्टफुलनेस अभियान को तेजी से आगे ले जाने में आप सबकी मदद चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि हजारों-हजारों, हजारों की संख्या में आप लोग आने वाले भंडारे के लिये अपना नामांकन फ़ार्म भरें, जो कि दो बैच में विभाजित किया जायेगा।

क्या मैं कुछ भूल गया हूँ ? मैं आप सब लोगों का धन्यवाद करता हूँ कि आप लोगों ने मुझे सुना। आप सब लोगों को ज्यादा से ज्यादा उपस्थिति में देखने की कामना करता हूँ। आप लोगों को अपने ऑर्गेनाइज़र (व्यवस्थापक) को अचंभित कर देना चाहिए कि वे दौड़ने लगे कि वे पर्याप्त सुविधायें नहीं दे पा रहे हैं। आगे चलकर समय के साथ आप लोग आइये, एक

बार में 35,000 से 45,000 तक लोगों के ठहरने की व्यवस्था हो जायेगी। स्थायी मेडिटेशन हॉल भी तब तक बनकर तैयार हो जायेगा। पूज्य लालाजी महाराज के जन्मदिन उत्सव तक सब कुछ हमारी आशाओं के अनुरूप तैयार हो जायेगा। अपने आपको इस आध्यात्मिक भव्य आयोजन के लिये तैयार करें। अपनी साधना को सशक्त बनायें। कुछ ही दिनों में 90 दिनों की चुनौती भी पूरी हो जायेगी। कई सारे अभ्यासियों ने इसमें भाग लिया है। मैं इससे बहुत खुश हूँ और अभ्यासियों में अत्यधिक परिवर्तन महसूस कर पा रहा हूँ। आगे बढ़ते रहिए , बिना रुके। ये 90 दिन आपकी आदत बन जायेगी और बिना प्रयास किये सहज रूप से आप चलते जाओगे। यह सचेतन (conscious) अभ्यास अव-चेतन (subconscious) रूप में होने लगेगा।

एक बार जब यह अभ्यास आपके अवचेतन मन में बस जायेगा तो वह आदत बन जायेगी। यह आदत आपको एक और अच्छी आदत की तरफ ले जायेगी। यह बदलाव जारी रहना चाहिए। जिससे कि हम बेहतर और ज्यादा बेहतर बनते जायेंगे।

धन्यवाद